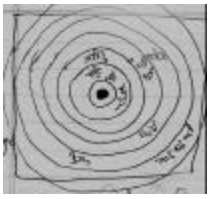

gailayaa sa

by lanes

Sarai: The New Media Initiative
A Programme of the Centre for the Study of Developing Societies

Ankur: Society for Alternatives in Education

2002

गलियों से / बाई लेन्स

सज्जा और प्रस्तुतिः
सराय मीडिया लैब और सराय पब्लिक इंटरफ़ेस ज़ोन,
सराय, दिल्ली

आलेख, फ़ोटोग्राफ़ और ऐनिमेशनः
कंप्यूघर से यशोदा सिंह, सूरज राय, शमशेर अली, शाहजहां, नसीमबानो, शहाना कुरैशी, नीलोफ़र, मेहरूनिसा, बॉबी ख़ान, बब्ली राय, अज़रा तबस्सुम और आयशा

संपादन और अनुवादः श्वेता
डिज़ाइनः मृत्युंजय चटर्जी
प्रस्तुति सहयोगः आर. एस. आनंद, सोहन पाल

संपादकीय सुझावः जीबेश बागची (सराय),
प्रभात कुमार झा (अंकुर)

प्रकाशकः
सरायः द न्यू मीडिया इनिशिएटिव
सेंटर फ़ॉर द स्टडी ऑफ़ डेवेलपिंग सोसायटीज़
29, राजपुर रोड, दिल्ली – 110054, भारत
फ़ोनः (+91) 11 396 0040, फ़ैक्सः (+91) 11 392 8391
ई–मेलः dak@sarai.net
वेबसाइटः www.sarai.net
+
अंकुरः सोसायटी फ़ॉर ऑल्टरनेटिव्स इन एडुकेशन
7/10, सर्वप्रिय विहार, नई दिल्ली – 110016, भारत
फ़ोनः (+91) 11 652 3395, फ़ैक्सः (+91) 11 652 1411
ई–मेलः ankureducation@vsnl.net

दिल्ली, जुलाई 2002.

इस किताब के किसी भी हिस्से के शैक्षिक और ग़ैर–व्यवसायिक इस्तेमाल के लिए प्रकाशक से इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं है। अलबत्ता लेखकों और प्रकाशकों को इत्तला कर दें तो उन्हें बेहद ख़ुशी होगी।

मुद्रकः थॉमसन प्रेस, नोएडा

Galiyon Se / by lanes

Produced and Designed at: Sarai Media Lab and Public Interface Zone, Sarai, Delhi

Text, Photographs & Animation at Compughar by Yashoda Singh, Suraj Rai, Shamsher Ali, Shahjehan, Shahana Qureshi, Nilofer, Naseembano, Mehrunnisa, Bobby Khan, Babli Rai, Azra Tabassum, Ayesha

Editing and Translations: Shveta

Design: Mrityunjoy Chatterjee

Production Assistance: R.S. Anand, Sohan Pal

Editorial Adivisors: Jeebesh Bagchi (Sarai), Prabhat K. Jha (Ankur)

Published by:
Sarai: The New Media Initiative
A Programme of the Centre for the Study of Developing Societies
29, Rajpur Road, Delhi 11 0054, India
Tel: (+91) 11 396 0040, Fax: (+91) 11 392 8391
E-mail: dak@sarai.net, www. sarai.net

+

Ankur: Society for Alternatives in Education
7/10, Sarvapriya Vihar, New Delhi - 11 0016, India
Tel: (+91) 11 652 3395, Fax: (+91) 11 652 1411
E-mail: ankureducation@vsnl.net

Delhi, July 2002.

Any part of this book may be reproduced in any form without written permission of the publishers for educational and non-commercial use. The contributors and publishers, however, would like to be informed.

ISBN 81-901429-1-7

Printed at: Thompson Press, NOIDA

Web link: http://www.sarai.net/community/cybermohalla/book01/bylanes.htm

कहाँ–कहाँ से गुज़रेंगे हम...

भूमिका

सायबर–मोहल्ला के बारे में

लेखकों से परिचय

कंप्यूघर की डायरियों से...

गलियाँ – कई आवाज़ें कानों तक – देखना – डेली रुटीन –
नल – बस्ती – दास्तान गलियों की – एक औरत की दिनचर्या –
समय – लोग – भाई मोहतरम से इन्टरव्यू – हामिद से बातचीत –
प्रधान – शलग़म – चाकू मारने की वारदात – आँखें – दुःख –
शोर – आँखें – हाथी पार्क – तेज़ाब की बारिश –
एक मुलाक़ात, अचानक – अपने बारे में – अंधेरा – खिड़की –
सड़क हादसा – झुर्र...झुर्र...झुर्र – छत – अगले दिन... – ताला –
दिमाग़ी टेन्शन – सपने – मौत का सीज़न – समय – कहानी –
नाटक – एक फ़ोटो की रीडिंग

शब्दों का फेर–बदल

छवियों पर प्रतिबिंब

ये तेरा घर, ये मेरा घरः ये कंप्यूघर

सायबर–मोहल्ला की तकनीकी कल्पना

सराय और अंकुर के बारे में

On the way...

Introduction
About Cybermohalla
Note on Contributors

The Diaries ...

Lanes - Many sounds reach the ear - Looking - Daily Routine - Flows - Basti - A passage to our lanes - A day in the life of a woman - Time - An interview with Bhai Mohatarum - A conversation with Hamid - Pradhan - Turnip - Stabbing Incident - About Eyes - Dukh - Noise of... - Eyes - Haathi Park - Acid Rain - A Chance Encounter - About Myself - Darkness - Window - Accidents - Jhur...jhur..jhur - Roof - The Day After... - Lock - Mental Tension - Dreams - The season of death - Time - Story Play - Reading of a photograph

...**from the Compughar**

In Other Words

Reflection on Images

Yeh Tera Ghar, Yeh Mera Ghar: Yeh Compughar

Technological Imagination of Cybermohalla

About Ankur/Sarai

पिछले एक साल से मैं कंप्यूघर के युवा-युवतियों से बातचीत के सिलसिले में शामिल हूँ। इन बातों में और बहुत सी चीज़ों के अलावा रास्तों और गलियों की चर्चा भी कई बार हुई। रास्तों की बातों का फैलाव बहुत गहरा होता है।

रास्ते हमें ले जाते सोचने को आदमियों के एक-दूसरे, और ख़ासकर औरतों के प्रति क्रूर और आक्रामक व्यवहार के बारे में, राह चलते लोगों के लिए पथों और आदर के अभाव के बारे में, सड़कों में रात को रोशनी के न होने, शोर मचाते ट्रैफ़िक और उसके बेपरवाह व्यवहार के बारे में, या फिर उन सड़कों पर बूढ़े और विकलित लोगों के प्रवेश की कोई संभावना न होने के बारे में। साथ ही, अंजान लोगों के बीच होने के बारे में, भीड़ में होने और भीड़ के साथ चलने के बारे में।

रास्ते हमें ले चलते ये सोचने, कि कैसे 'ख़तरनाक़, अकस्मात् होने वाली घटनाओं से भरी राहें', हर उस आवाज़ को जायज़ बना देती है जो हमें घर ही में रहने को कहतीं हैं। कैसे बचाव की, सुरक्षा की, बाहर की दुनिया के संदेह की, ख़ास सामाजिक दर्जों की भाषाएँ, शब्दों की परतों से घेर कर घर के अन्दर की हवा को स्थिर, बासी और कभी-कभी असहनीय बना देतीं हैं।

For the last one year now, I have been in regular conversation with the group of young people in Compughar. Amongst other things streets and lanes were discussed many times. Streets make for great conversations.

Streets would lead us to think about the harsh and aggresive behaviour of men towards each other and towards women in particular, the total lack of pedestrian pathways or respect towards them, the absence of street lighting, noisy traffic and its uncaring behaviour, or the near-total inaccessibility for disabled people or elder people. Also about being amidst strangers, in crowds and moving with crowds.

Streets would also make our conversations move towards how the `dangerous, unpredictable street' becomes a legitimation for being told to stay at home. How the language of safety, of security, of suspicion of the outside world, of specific social positions creates enveloping layers of words that can make the air inside the home still, stale and sometimes unbearable.

A few days ago, one of the group insisted on an interesting perspective. She said that she needed to walk. No compromise on that. Being on the street, like everyone else, she sensed a freedom. A freedom to see things and faces and to feel part of a flow, a freedom to think about others, even though there is also always a lingering fear. Being alone makes this fear grow.

कुछ दिन पहले उनमें से एक ने ज़ोर दिया एक दिलचस्प नज़रिए पर। उसका कहना था कि उसे ज़रूरत है चलने की। इस पर समझौता नामुमकिन है। रास्ते पर, बाक़ी सभी की तरह, उसे एक आज़ादी का अहसास होता है। आज़ादी चीज़ें और चेहरे देखने की, बहाव में शामिल होने की, आज़ादी दूसरों के बारे में सोचने की। हालांकि इसके आस-पास हमेशा एक डर भी मंडराता रहता है। अकेला होने से ये डर बढ़ता है।

जब उसने कहा उसे ज़रूरत है चलने की, सभी उससे सहमत थे। जितना हम चलते हैं, उतना ही हमारे विचार भी चलते हैं। जब उसने कहा उसे ज़रूरत है लोगों के उसके साथ चलने की, सब फिर सहमति में थे। सुरक्षित महसूस करने की, और ख़्यालों, विचारों, गुस्से में दूसरों को शरीक़ करने की सभी को ज़रूरत होती है।

फिर वो बोली ये तभी हो पाएगा जब वो एक सांझा समूह बनाएगी। और वो बन सकेगा, कहने, बोलने और बातचीत के ज़रिए। कह कर, बोल कर, बता कर कि बहने में एक उल्लास है। कि छोटी-छोटी आज़ादियों को बाँटने में बरकत है।

कहने, बोलने, बताने का सिलसिला जारी है। कौन चलेगा उसके साथ?

जीबेश बागची

When she said that she needed to walk, everybody agreed. The more we move, the more our ideas move. When she said she needed people to walk with her, everybody agreed again. You need to feel comfortable, and also share thoughts, ideas, anger.

Then she said that this could come about only if she builds a community (*sanjha*) through the narration of the excitement of flow, and the sharing of small freedoms.

The narration is unfolding. Who will walk with her?

Jeebesh Bagchi

सायबर–मोहल्ला के बारे में

'सायबर' का इशारा असीम की ओर है। ठीक उसी तरह जैसे 'मोहल्ला' ठोसता, वाक़फ़ियत, अपनेपन और जगह–विशेष की ख़ासियत का प्रतिबिंब है। सराय का सायबर–मोहल्ला प्रोजेक्ट इन दोनों शब्दों की विशेषताओं को अपने अन्दर समाता है। गलियों और नुक्कड़ों की सजीवता और सीमाओं के अन्दर की महफ़ूज़ियत का अहसास, और असीमता के खुलेपन और फैलाव का एक–दूसरे से निकलता मतलब खोजता है। और शायद इस तरह सायबर–मोहल्ला बन जाता है हमारे लिए एक ज़रिया, इस शहर और सायबर जगत में अपनी जगह, अपने स्थान को बयान करने का।

सायबर–मोहल्ला को कई दिशाओं, कई नज़रियों से देखा और समझा जा सकता है। एक शुरूआत शायद कर सकते हैं एक असंतुष्टि से, एक आलोचना से। नाख़ुशी ज़ाहिर करके आज की मान्यता प्राप्त और आम–तौर पर, बिना कोई प्रश्न पूछे इस्तेमाल किए जाने वाले उन माध्यमों के समूह से जिन्हें हम मीडिया कहते हैं।

ये असंतुष्टि एक रचनात्मक आलोचना का रूप लेती है। और इससे उभरती है एक वैकल्पिक नीति जो शिरक़त, सांझेपन और मुक्त रूप से बढ़ और फैल पाने की अहमियत पर आधारित है।

'प्रयोग' एक और आधार है सायबर–मोहल्ला का। प्रयोग, जो पैदा होता है मीडिया की तकनीकों और सॉफ़्टवेयर के इस्तेमाल और उससे जन्मी समझ से। सायबर–मोहल्ला इस विश्वास में रमा है कि टेक्नॉलजी को इस्तेमाल करने वाले क्षमता रखते हैं अपनी ज़रूरतों और संदर्भ के हिसाब से उसे ख़ुद बदलने और नए ईजाद करने की।

About Cybermohalla

Cybermohalla, the word, suggests a hybrid location. It has the open-endedness of cyberspace, qualified by the local specificities and intimacy of a mohalla, or a dense urban neighbourhood. Sarai's Cybermohalla project takes on the meaning of the word mohalla, its sense of alleys and corners, its sense of relatedness and concreteness, as a means for talking about one's 'place' in the city, and in cyberspace.

One can approach the Cybermohalla project from many directions. One can begin with a critique of the technological imagination and the expressive universe of the dominant mediascape, and then go on to map a counter strategy which grounds itself on access, sharing and democratic extensibility. One can see it as an experiment to engage with media technologies and software 'tactically' and create multiple local media contexts emerging within the larger media network that the Internet seems to engender. Still further, one can see it as an engagement with local history, experiences, modes of expression and creativity.

In its broadest imagination, one can see Cybermohalla as a desire for a wide and horizontal network (both real and virtual) of voices, texts, sounds and images in dialogue and debate. 'Public'-ation modes are and will be as diverse as wall magazines, books, posters, stickers, web pages, audio streams, animation, etc. The present technological juncture provides a possibility - the point is to actualize it.

The present selection of writings is culled from the diaries maintained by young people working at the Compughar in the LNJP basti, Delhi. A working class settlement that is under constant threat of dislocation, the basti is in the heart of the city, though invisible to Delhi's many millions. Compughar, started in May 2001, is a small media lab running on free software and low cost media equipment, and is a collaborative effort between Sarai, an inter-disciplinary research programme around media cultures in urban spaces, and Ankur, an

ऐसे संदर्भ-विशेष और यूज़र द्वारा खुद बनाए स्थानीय (और इसलिए विभिन्न) मीडिया अपनी जगह पाते और बनाते हैं उस विस्तृत नेटवर्क में जिसे इंटरनेट ने ज़ाहिर और मुमकिन किया है। थोड़ा और ध्यान से देखने पर आप पाएंगे कि इसका मतलब है कि सायबर-मोहल्ला स्थानीय इतिहास, बयान करने के ज़रियों और रचनात्मकता में दिलचस्पी रखते हुए उन्हें खोजता, टटोलता, उभारता और उनसे संवाद करता है।

सायबर-मोहल्ला की गहराई और उसकी सबसे बड़ी कल्पना एक ख़ास तलब से उपजी है। तलब एक विशाल, लगातार फैलते नेटवर्क बनाने की, जिसमें कई आवाज़ें, लेख, ध्वनियाँ और छवियाँ आपस में करें संवाद और बहुत सी बहस।

एक नेटवर्क जिसमें देने और लेने वालों, कहने और सुनने वालों, बनाने और इस्तेमाल करने वालों की अलग-अलग जातियाँ न हों। बल्कि जिसमें इस क़िस्म के दुराव और अलगाव की कोई जगह ही न हो। एक नेटवर्क जो हमारे संदर्भों में बसा हो, हमारी हक़ीक़तों से रंगा हो, और उन्हें दूसरों तक बयान करने और दूसरों की बात हम तक पहुँचाने का ज़रिया बन सके। एक नेटवर्क, जो हमारी ज़मीनी हक़ीक़त और वर्चुअल दुनिया, दोनों का हो।

बात बढ़े, बदले, जीवित रहे, इसके लिए बेहद ज़रूरी है कि वो सभी के बीच घूमे। इसके लिए कई ज़रिए अपनाता है सायबर-मोहल्ला - नुक्कड़-पत्रिकाएँ, किताबें, पोस्टर, स्टिकर, वेब-पेज, ऑडियो-स्ट्रीमिंग, ऐनिमेशन, और भी कई। मौजूदा तकनीकी हक़ीक़तों और हालात ने हमारे सामने एक संभावना खोली है - उसे साकार करना अब हमारे ज़िम्मे है।

ये किताब जिसे आप छू और पढ़ रहे हैं, उन डायरियों के अंशों का संकलन है जो दिल्ली की एलएनजेपी बस्ती में स्थित कंप्यूघर के

NGO working for the last two decades in experimental education.
The young people (mainly young women) who come to the Compughar are between the ages of 15 and 23. Most of them are school irregulars and dropouts. Their writings can be seen as a database of narrative, comment, observation, word play and reflection. Written in Hindi, the English translations have also been included here.

To us this selection evokes a sense of the everyday that gestures towards an intricate social ecology. We invite you to enjoy and engage with this specific mode of writing the city.

युवक-युवतियाँ लिखते हैं। शहर के बीचों-बीच, पर दिल्ली के करोड़ों की नज़रों से ओझल, मज़दूरों की ये बस्ती विस्थापन के डर के साये में जीती है। मई 2001 में शुरू हुआ कंप्यूघर मुक्त सॉफ़्टवेयर और कम दाम वाले मीडिया उपकरणों पर चलता है। ये एक सांझा प्रयास है सराय (जो शहर की मीडिया संस्कृति पर केंद्रित, ज्ञान के पारंपरिक खांचों-साँचों से आज़ाद शोध कार्यक्रम है) और अंकुर (जो बीस साल से शिक्षा में विकल्प की तलाश पर कार्यरत एनजीओ है) का।
कंप्यूघर के युवक-युवतियों (ज़्यादा युवतियाँ हैं यहाँ) की उम्र पंद्रह से तेईस साल है। काफ़ी स्कूल छोड़ चुके हैं। कुछ स्कूलों में पढ़ते हैं, कोई-कोई नियमित तौर पर भी। हिंदी में लिखे उनके लेख (जिनका यहाँ अंग्रेज़ी अनुवाद भी प्रस्तुत है) कहे, बोले, देखे-सुने, सोचे, विचारे, शब्दों से खेले और चिन्तन किए गए का डेटाबेस माना जा सकता है। इनसे उभरता है रोज़मर्रा का एक ऐसा अहसास जो समाज के सम्बन्धों के बीच की जटिलता की तरफ़ संकेत करता है।

आइये, लिखने के इस ख़ास नज़रिए और तरीक़े में शामिल हों और इसका लुत्फ़ उठाएँ।

लेखकों से परिचय

आयशा एक ख़ामोश-सी, शर्मीली लड़की थी। वो आठवीं जमात में पढ़ती थी। 2001 के गर्मी के मौसम में उसका इन्तक़ाल हो गया। किस बीमारी की वजह से, ये हमें मालूम नहीं है।

अज़रा तबस्सुम बीस साल की है। शब्दों और शब्दों में ढली तस्वीरों की दुनिया में वो रहती भी है, और सभी को उसमें शरीक़ भी करती है। आत्मविश्वास से भरी, और सोच के ताने-बाने को सुलझाती, उनसे जूझती, अज़रा ख़्यालों और भावों को टटोलती भी है, उनके साथ बहती भी है, और कंप्यूघर के अपने साथियों को इनसे छुआ कर उन्हें छेड़ती और सोचने पर मजबूर भी करती है। हायपर-लिंकिंग में अज़रा को बड़ा लुत्फ़ मिलता है। और शायद ये अज़रा के विचारों और सोच के बीच के सम्बन्धों को दर्शाता भी है। कंप्यूघर और उसमें होती कार्यविधियों की देख-रेख अज़रा करती है।

बबली राय अपने विचारों पर भरोसा रखती है और उन्हें बेहद साफ़ ढंग से पेश करती है। घर में ही रहने के दबाव के बीच, कंप्यूघर में उसे मुक्त रूप से एक आज़ाद समाज की कल्पना करने की जगह मिली है। इसे वो बख़ूब अपनी स्थानीय असलियतों के नज़रिए से समझते हुए बयान करती है।

बॉबी ख़ान एक माहिर क़िस्सागो है। वो नए और अन्जान से बहुत आसानी से प्रभावित होती है। छोटे पर्दे पर नज़र आते और बस्ती में घूमते-घुमाते क़िस्से-कहानियों की सच्चाई में विश्वास रखते हुए वो आप-बीती का, और ख़ुद अपना वर्णन इन्हीं के ज़रिए करती है। बॉबी द्वारा अपनाया गया ये माध्यम हर वक़्त परखा जाता है उसके कंप्यूघर के सभी साथियों द्वारा, जो मानते हैं कि यह 'असलियत' और 'अनुभवित' से परे है और बॉबी को दूसरों के कथनों के प्रति कमज़ोर बना देता है।

Notes on the Contributors

Ayesha was a quiet, withdrawn and shy girl. She was studying in class 8. She died with an undiagnosed disease in the summer of 2001.

Azra Tabassum shares her self with all by weaving together in words and word-images the worlds she inhabits. Confident and confused, she is comfortable with ideas, and engages with them constantly, also infecting the group with them. Hyperlinking excites her and she finds that it reflects her relationship with ideas. She is 20 years old and co-ordinates the activities and organisaton of the Compughar.

Babli Rai is confident with her ideas and expresses them with extreme clarity. Under pressure to stay within her home, she has found in the Compughar a space to imagine a society that is free. She thinks this through with a rigour that comes from an understanding of the context in which she is located.

Bobby Khan, a skillful story teller, is easily enthused by the new and unfamiliar. Convinced of the veracity of televisual narratives and event-narratives circulating within the basti, she narrates her self through these. This mode is under pressure from others in the group for being removed from what is `real' and `experienced' and for making Bobby gullible to the power of others' narrative.

Mehrunnisa is as adept with the mouse as she is with the pen, which she uses both to draw and to write. Unable sometimes to express the complexity of all she experiences in words, she has found in Gimp (image manipulation free software) an outlet, and an inspiration.

नसीमबानो लाती है कंप्यूघर में एक क़ाबलियत, बस्ती और बाक़ी के शहर के एक-दूसरे से निकलते मतलब ढूँढने की। इस साल मई में बस्ती में लगी भीषण आग में उसका घर पूरी तरह से जल गया।

मेहरूनिसा माऊस का इस्तेमाल करने में उतना ही हुनर रखती है जितना कि कलम का, जिससे वो लिखती भी है और ड्रॉइंग भी करती है। अनुभवों की जटिलता को कई बार शब्दों से बयान न कर पाते हुए गिम्प (मुक्त सॉफ़्टवेयर प्लैटफॉर्म पर चलने वाला तस्वीर गढ़ने का सॉफ़्टवेयर) में उसे मिला है एक माध्यम बातचीत का, और एक प्रेरणा भी।

नीलोफ़र, और उसकी सोच के दायरों को बढ़ाने और कई विचारों को जोड़ पाने की फ़ितरत, कंप्यूघर में लाते हैं एक मानसिक और विचारात्मक चतुराई, और मिलजुलकर, साथ-साथ किसी धारणा को समझने और गहराई देने की सहजता। नीलोफ़र स्कूल छोड़ चुकी है और लिखकर बात को पेश करने में माहिर है। हाल ही में उसने गिम्प को अपना साथी बनाया है और अपने तजुर्बों को अब रंगीन चित्रों में उतारने लगी है। वो टेप रिकॉर्डर का इस्तेमाल करती है नए माहौल और जगहों में प्रवेश करने के लिए।

शहाना कुरैशी कंप्यूघर में सबसे बड़ी है। वो शहर में आसानी से घूमती और तरह-तरह के लोगों से बातचीत करती है। अपने इस शहर को वो कंप्यूघर में अपनी बातों के ज़रिए लाती है और इस तरह हम सभी का बस्ती के बाहर बहना मुमकिन और आसान बनाती है।

शाहजहाँ नियमित रूप से स्कूल जाती है। और उसे बहुत गम्भीरता से लेती है। स्कूल और घर के काम के बीच उसे कंप्यूघर में मिले हैं अन्तर-स्थल चिन्तन और अध्ययन के लिए।

Naseembano brings to the group an agility with exploring the ways in which the basti and the city fold into one other. Her house was among those completely destroyed by the fire that gutted a huge part of the basti in May this year.

Neelofer, and her ability to abstract, brings into the group a conceptual sharpness and a comfort with collectively thinking through an idea. She dropped out of school and writing is the medium she is extremely at ease with. She has recently started exploring Gimp as another mode of expression. She uses the tape recorder as a tool to move into spaces.

Shahana Qureshi is the oldest in the group. Comfortable with moving in the city and interacting with diverse peoples, she brings her city into the conversations at the ghar, lending them a texture that eases our flowing into the world outside the basti.

Shahjehan attends school regularly. And takes it very seriously. Between homework and housework she has found in the Compughar a space for reflection.

Shamsher Ali is comfortable with video games, Gimp and Star Office (text and html editing free software). Shy with written words and playful with tape recorders, cameras and animation. Sharp observations about things around is always made light by constant reference to being young.

Suraj Rai, 15, enjoys making layered animation in Gimp. His restless energy makes him a quick learner and so, a difficult student. He is the youngest in the group, and seems to be attending school.

Yashoda Singh leaves behind a difficult year. Her neatly wraped notebook is her companion in the exploration of her experience and surroundings. She keeps two notebooks, a rough and a fair. It's from the fair that she tells her stories, her ideas. The Roman script keyboard was for her no obstacle in transfering on to the screen her writings in Devanagri.

They can be contacted at compughar@sarai.net

शमशेर अली विडियो गेम, गिम्प और स्टार ऑफ़िस (मुक्त सॉफ़्टवेयर प्लैटफॉर्म पर चलने वाला लिखने का सॉफ़्टवेयर) में निपुणता रखता है। लिखने से थोड़ा शर्माता है, और टेप-रिकॉर्डर, कैमरा और ऐनिमेशन (कम्प्यूटर पर गिम्प इस्तेमाल करके चलते हुए चित्र) से प्रयोग और खेल करने की हिम्मत रखता है। आसपास की दुनिया के बारे में अपनी चतुर और गम्भीर टिप्पणियों को वो "मैं तो अभी बच्चा हूँ", ये कह कर एक हल्कापन दे देता है।

सूरज राय, उम्र 15, बहुत मज़े से गिम्प पर कई परतों वाली ऐनिमेशन बनाता है। उसकी चंचलता उसमें एक उत्सुकता और तीव्रता पैदा करती है नई चीज़ें सीखने की, और बनाती है उसे एक बहुत ही कठिन विद्यार्थी। कंप्यूघर में सूरज सबसे छोटा है। आमतौर पर माना जाता है, हालांकि हमें कभी-कभी शक़ होता है, कि सूरज स्कूल जाता है।

यशोदा सिंह आप-बीती परेशानियों को पीछे छोड़ आई है। साफ़-सुथरे काग़ज़ से ओढ़ी उसकी कॉपियाँ उसकी साथी हैं अनुभवों और आस-पास के माहौल को जाँचने और समझने में। यशोदा दो कॉपियाँ रखती है अपने साथ, एक 'रफ़' और एक 'फ़ेयर'। फ़ेयर कॉपी से वो सुनाती है अपनी कहानी, अपने विचार। अंग्रेज़ी अक्षरों वाला की-बोर्ड उसके लिए कोई बाधा नहीं बना देवनागरी से कम्प्यूटर स्क्रीन तक अपने लेख पहुँचाने में।

इन सभी से compughar@sarai.net पर बात की जा सकती है।